Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):117-118: 2019

ISSN: 2348-0084(P)
ISSN: 2455-2127(O)

बाढ़ : एक आपदा

नीरज कुमार सिंह[1], सुधीर कुमार सिंह[2]

[1,2]असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी.सी.एस.के.पी.जी. कालेज, मऊ, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

बाढ़ शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में किसी क्षेत्र की जलप्लावित तस्वीर उभर आती है, जहॉ के लोग अनेकानेक समस्याओं का सामना कर रहे होते हैं। विगत कुछ दशकों के अनियोजित विकास ने बाढ़ को एक मानव जनित आपदा के रूप में स्थापित किया है, जिससे बड़े पैमानें पर आर्थिक एवं सामाजिक समस्यायें उत्पन्न हो रही है अगर समय रहते हम नियोजित विकास के लिए कदम नही उठायेंगे तो भविष्य में बाढ़ और भी गंभीर समस्या के रूप में हमारे समक्ष चुनौती प्रस्तुत करेगी।

KEYWORDS : *अनियोजित विकास, आपदा, दीर्घकालीन प्रबंधन*

जब कभी भी अत्यधिक वर्षण के द्वारा कोई क्षेत्र जलप्लवित हो जाता है तो मानव समुदाय के समक्ष गंभीर चुनौती उत्पन्न हो जाती है। बाढ़ मूलतः मौसम की अनिश्चितता के कारण किसी क्षेत्र में अत्यधिक वर्षण से उत्पन्न होने वाली समस्या है।

राष्ट्रीय बाढ़ आयोग के अनुसार नदी के सामान्य जलस्तर में वृद्धि के कारण किसी क्षेत्र का जलमग्न होना ही बाढ़ है।

वहीं पारिस्थितिक विदों के अनुसार स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र का जलीय पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तन का कारण बाढ़ है।

बाढ़ के लिए मानवीय तथा जलवायवीय दोनों ही कारक उत्तरदायी है जिसे हम निम्नलिखित मॉडल द्वारा सहजता से समझ सकते हैं

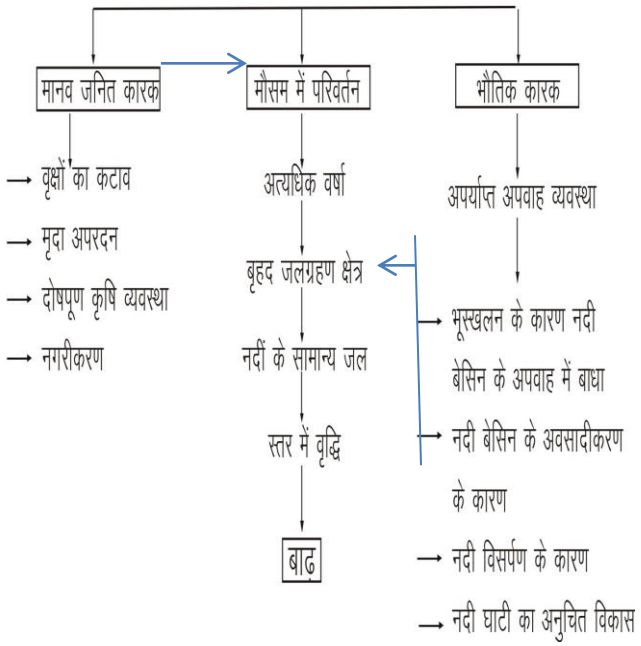

उपर्युक्त माडल से स्पष्ट हो रहा है कि मानव जनित कारक, भौतिक कारक तथा जलवायवीय कारक के सम्मिलित प्रभाव से या किसी भी कारक के प्रभावी होनें पर बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होती है, लेकिन पिछले कुछ दशक में आने वाली बाढ़ों में मानवीय कारक का ही सर्वाधिक योगदान रहा है। किसी भी क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होने पर वहॉ के निवासियों को आर्थिक, सामाजिक समस्यायें झेलनी पड़ती है साथ ही साथ पशुधन की भी बड़े पैमाने पर क्षति होती है। बाढ़ के समय मानव समुदाय के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं को निम्नलिखित माडलों द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

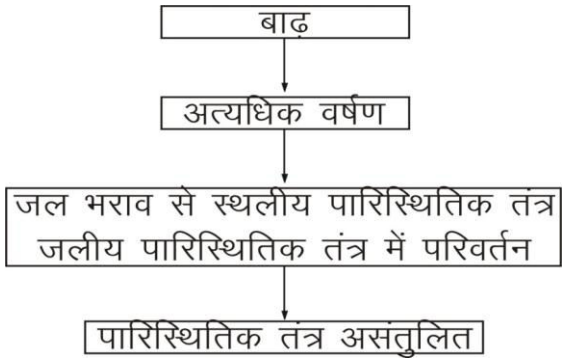

जल भराव के कारण बड़े पैमाने पर जन धन एवं पशुधन की क्षति होती है वहीं संक्रमित जल से बीमारियॉ फैलने लगती है जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जलभराव से स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र जलीय पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तित हो जाता है जो पारिस्थितिक तंत्र के असंतुलन की समस्या को उत्पन्न करता है।

बाढ़ का सर्वाधिक विनाशकारी प्रभाव विकासशील देशों में देखने को मिलता है क्योंकि विकासशील देशों में आर्थिक संसाधन सीमित होते हैं तथा अधिकांश जनसंख्या गरीब होती है।

भारत में अगर राज्य स्तर पर देखा जाये तो पूर्वोत्तर के राज्य, पश्चिम बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश सर्वाधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है। वहीं विगत कुछ वर्षों से प्रायद्वीपीय भारत के कुछ क्षेत्रों तथा

1: Corresponding Author

राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में मूसलाधार वर्षा की वजह से बाढ़ की समस्या उत्पन्न हो रही है। .

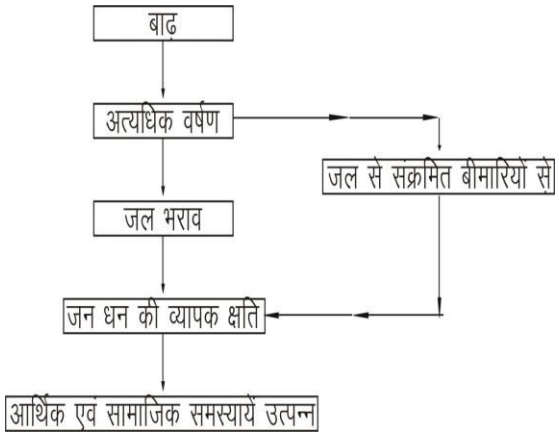

जिससे वहॉ का जनजीवन प्रभावित हो रहा है। बिहार में बहने वाली कोसी नदी बाढ़ के लिये कुख्यात है। नेपाल में अधिक वर्षा होने पर जब भी पानी छोड़ा जाता है तो बिहार में बाढ़ की स्थिति और भी भयावाह हो जाती है। बिहार में आने वाली बाढ़ के कारण ही वहॉ की एक बड़ी आबादी अन्य राज्यों में जीविकोपार्जन हेतु स्थानान्तरण करने के लिए विवश है। बाढ़ जब बृहद पैमाने पर मानव समुदाय को प्रभावित करती है तब वह आपदा का रूप ले लेती है जैसे दिसम्बर 2015 में तमिलनाडू में आने वाली बाढ़ से हजारों करोड़ रूपये की क्षति हुई तथा लगभग 400 से अधिक लोगों की मृत्यु ही हुई। इसी प्रकार वर्ष 2018 मे केरल में भी बाढ़ से व्यापक पैमाने पर आर्थिक क्षति हुई।

इस प्रकार की आपदा का रूप लेने से बचाने के लिए हमें बाढ़ का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता है जिसमें दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन रणनीतियों का समावेश होना चाहिए। बाढ़ से पूर्व प्रबंधन के लिए सामान्यतः दीर्घकालीन रणनीति का उपभोग किया जाता है इसके अन्तर्गत किसी क्षेत्र में बाढ़ आने की संभाव्यता के आधार पर वहॉ के जलवायवीय तथा पारिस्थितिकीय संबंधो के आधार पर मानव जनित विकासात्मक गतिविधियों को नियंत्रित किये जाने का प्रयास करना चाहिए तथा विकास के इकोफ्रेन्डली माडल को अपनाना चाहिए इसके अलावा उस क्षेत्र के प्राकृतिक जल श्रोतों तथा निकासी के माध्यम को अतिक्रमण से बचाना चाहिए। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात प्राकृतिक जल श्रोतों के स्थान पर तेजी से बहुमंजिला इमारतों का निर्माण किया गया जिससे बाढ़ की समस्या गंभीर होती जा रही है। अल्पकालीन रणनीति के अन्तर्गत सम्बन्धित क्षेत्र के लिए चेतावनी जारी किया जाना चाहिए जिससे कि वहॉ के निवासी अपने जरूरी सामग्री के साथ सुरक्षित स्थान पर शरण ले सकें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को निकालने के लिए इसके अलावा प्रभावित क्षेत्र में स्वच्छ पेयजल, भोजन के पैकेट, तथा आवश्यक चिकित्सा सहायता उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

भारत में बाढ़ की स्थापना की समस्या से निपटने के लिए विगत कुछ वर्षों से अल्पकालीन रणनीतियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा एनडीआरएफ0 को सशक्त बनाने के साथ–साथ अनेक राज्यों द्वारा भी राज्य आपदा बचाव दल का गठन किया गया है। इसके अलावा बाढ़ की स्थिति ज्यादा गंभीर होने पर सरकार द्वारा राहत एवं बचाव कार्यों के लिए सेना की भी मदद ली जा रही है।

हम प्रत्येक वर्ष भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बाढ़ का प्रकोप देखते हैं जिससे बड़े पैमानें पर आर्थिक क्षति होने के साथ – साथ जान माल की भी क्षति होती है यदि हम समय रहते बेहतर प्रबंधन करे तो न सिर्फ हम आर्थिक समाजिक समस्या से बच सकते हैं बल्कि इन संसाधनों का उपयोग हम अपने विकास के लिए कर सकते हैं। इसके लिए हमें सिर्फ सरकार पर निर्भर रहने के बजाय स्वयं पहल करते हुए इसे जनआंदोलन का रूप देना होगा तभी हम बाढ़ रूपी आपदा से मुक्ति पा सकेंगे।

सन्दर्भ :–

सिंह, सविन्द्रः (2006), *भौतिक भूगोल*, गोरखपुर,वसुन्धरा प्रकाशन

तिवारी, आर0सी0 (2007), *भारत का भूगोल*, इलाहाबाद प्रयाग पुस्तक भवन,